Poem 1 "सफेद दाग: कभी मुझे ना होना"

हो तो किसी को भी सकता था,
पर मुझे नहीं होना चाहिये था,
होगा क्या फिर मेरा?
जब रह जाएगा सहारा आत्महत्या का।

कभी पापी,
तो कभी अनछुई कहा,
उन्होंने कभी कोसा
और कभी घर से निकाला।

है कैसी ये असंवेदनशीलता?
इस शालीन ज़माने की,
चमड़ी का रंग क्या बदला,
उन्होंने मुझे पहचाना नहीं।
गैरों की तो क्या ही बोलूँ?
अपनों ने ही अवसादों में डाल दिया।

ऐ बुद्धिजीवियों,
रोग को शालीनता से ना जोड़िए
खामखाँ बातें बनाइये नहीं,
मानवता को गिराइये नहीं।

क्या हुआ अगर,
मैं रोगी हूँ,
पर अभी तक मैं सोई नहीं,
खोलो तुम भी नींदों को,

सहारा बनो उन लोगों का।

ऐ परिवर्तन की करवट,
मुँह तोड़ जबाब देना,
अच्छे समाज की नींव रखना,
वो समाज रचना,
जिसमें ये रोग ना रखना,
ऐसे समाज में मेरा कोई ना रखना,
सफेद दाग- मुझे कभी ना होना।

Ms. Shivani Jadaun
1st year Nursing student 2017, AIIMS Bhopal

Poem 2: यह चुपचाप मेरे जीवन में प्रकट हुआ

यह चुपचाप मेरे जीवन में प्रकट हुआ
फिर पूरे शरीर पर प्रसार किया
मेरे जीवन में इसने
दुश्मन के जैसे आघात किया

था में सुन्दर, सलोना, शावला
अपनी सुन्दरता पर इतराता था
फिर आये कुछ श्वेत चिन्ह शरीर पर
जैसे मुझे किसी ने अभिशाप दिया

अव मेरी त्वचा सफेद सूखी है
अब मेरी त्वचा जल रही

धीरे धीरे मेरी त्वचा
गिरगिट सी रंग बदल रही

बच्चे बूढ़े और जबान
अब सभी मुझे चिड़ाते है
भारत अफ्रीका का मिश्रण हू मैं
लोग यह कहकर बुलाते है

मेरे आंसू रुक ना पाते है
जब में खुद को देखता हू
कहा गया वो मेरा सौंदर्य
हर वक्त यही में सोचता हू

हो गए कई वर्ष इस बीमारी को
अब में किसी के सामने ना जा पाता हूँ
कैसे जी रहा हूँ, इस बीमारी के साथ
यह किसी को बता नही पाता हूँ

पर में जिया इस बीमारी के साथ
और इसका मेने उपचार किया
धीरे धीरे इस बीमारी को
मैने अपने आप से दूर किया

यह चुप चाप मेरे जीवन में.....

शिवम कुमार चौधरी
Dept. of Biochemistry, Trainee student 2017, AIIMS Bhopal

Poem 3:

यूँ तो वो मुश्किल से कभी घबराता नहीं है
बस शर्म से आजकल बाहर जाता नहीं है

कमी फरमाई नहीं है कूदरत ने उसे ऐसे तो
मेरा दर्द है कि वो खुल के मुस्कुराता नहीं है

ये जो सफ़ेद दाग देखते हो बदन पे उसके
मिट गया, पर तुम्हारे मन से धुंधलाता नहीं है

वो गरीब है, दुनिया उसपे तंज कसती हैं
अमिताभ के आगे कोई सुगबुगाता नहीं है

कभी अंधेरों मे खड़े होकर खुद को निहारइए
अंतर उसमें-आपमें कोई नजर आता नहीं है

ये जो भी लोग हैं, इन्हें बस दवा-दारू चाहिए
ये ना समझो लाइलाज है ठीक हो पाता नहीं है

इन्हें भी साथ बैठाओ, खिलाओ, गले लगाओ
मोहब्बत बांटने में अपना कोई घाटा नहीं है

- सुमन "रौशन"

Mr. Suman Raushan
MBBS final year (2013), AIIMS Bhopal

A GIRL WITH VITILIGO

I'm black and white
My skin is canvas of these colors
They find it weird
But I see it beautiful
They try me to feel bad

But I always be happy as I look different from them
They say I no longer belong to their society
But I say this society no longer belongs to me

As it has no eye to see the beauty of my heart, beauty of my mind

& beauty which exists deep inside my skin
I don't care about what they think about me
I just think that what I feel about myself

&; I feel that……
I'm beautiful by heart,
Strong by body,
Intelligent by mind,

&; confident enough to deal my issues on my own

My skin colors are blessing to me as they helped me to recognize myself

So, who you are to let me feel down

Just stop staring and let me fly & live my dreams with my beautiful colors.

Dr Suman Dhakar
Senior Resident
Blood Transfusion Dept.

Pls note that the poem and artwork are sole property of the owners.

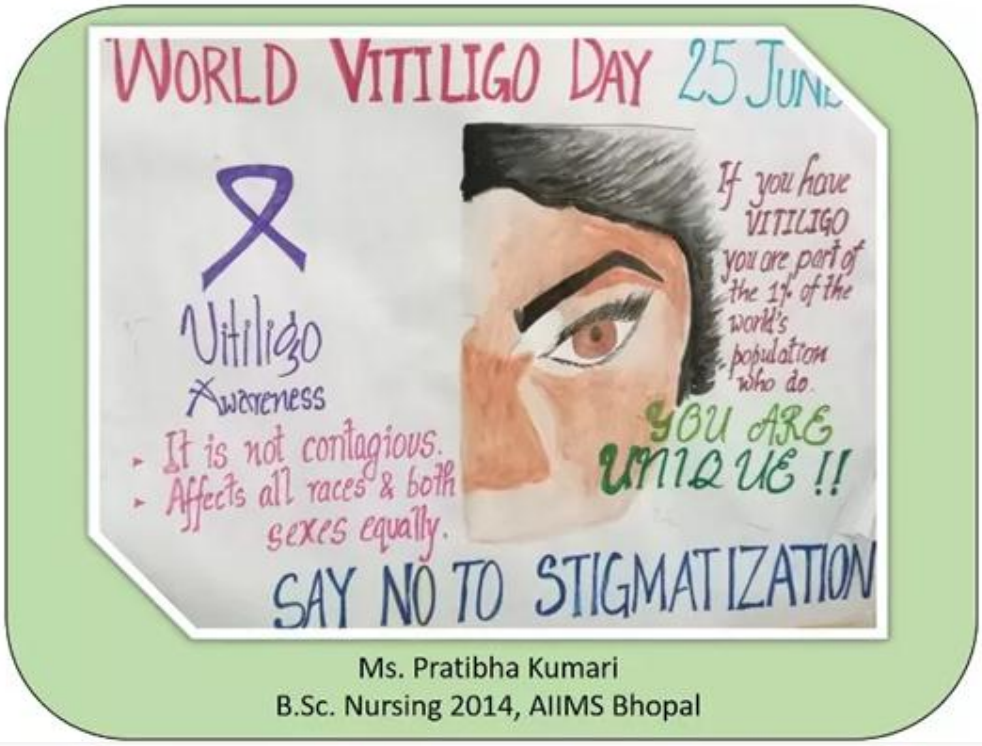

Ms. Pratibha Kumari
B.Sc. Nursing 2014, AIIMS Bhopal

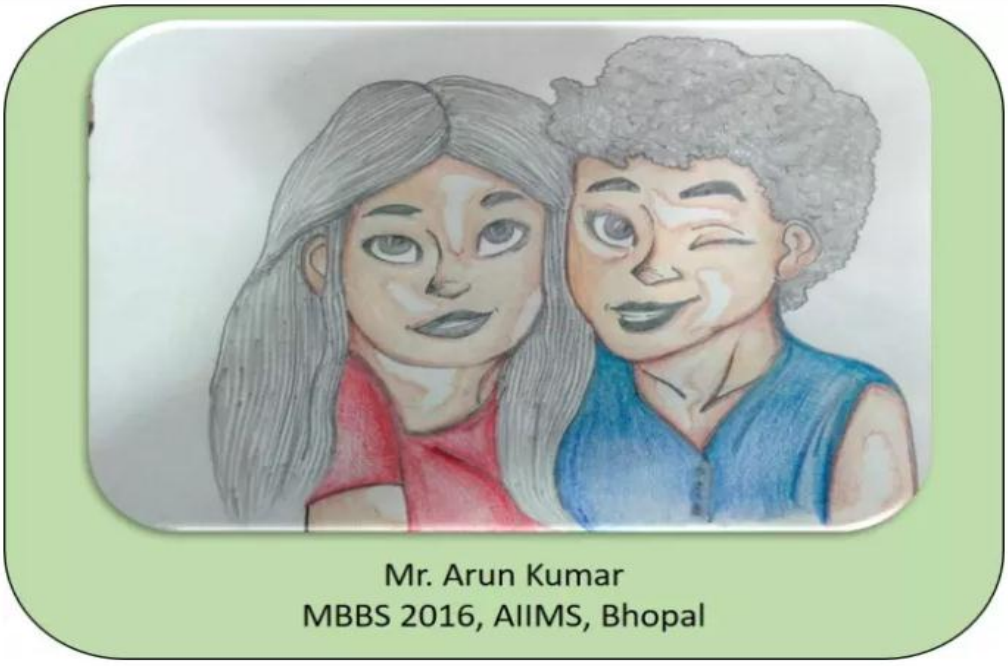

Mr. Arun Kumar
MBBS 2016, AIIMS, Bhopal

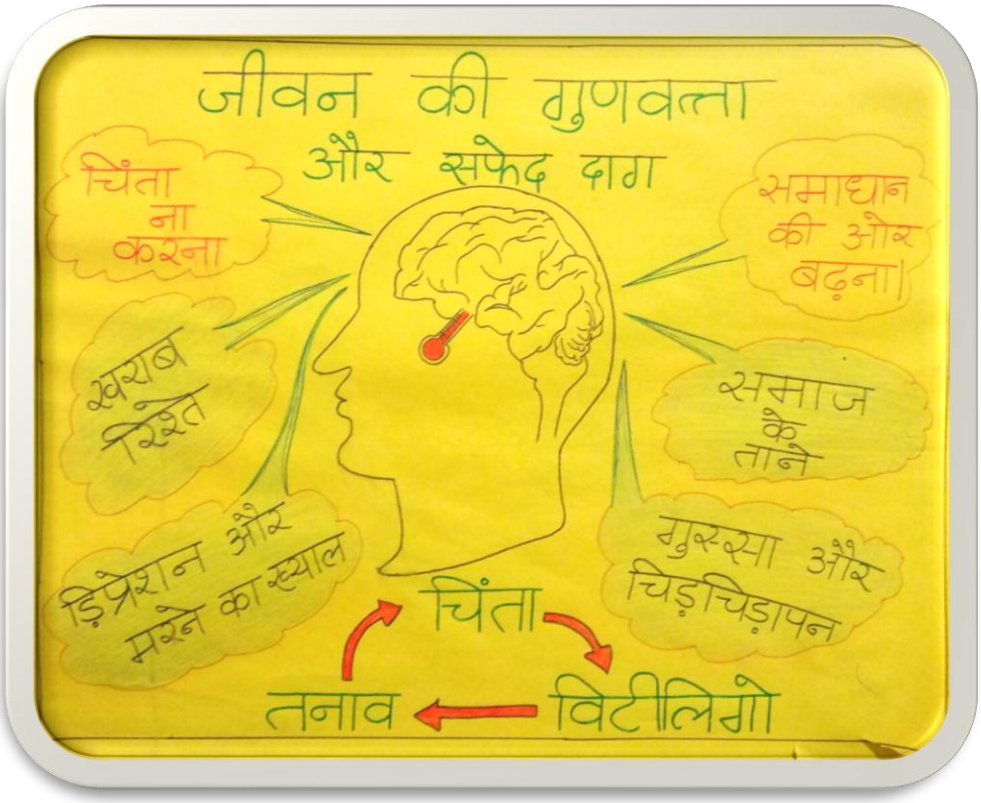

Ms Apurva Maheshwari (MBBS 2014)

Ms. Shubha Bagri and Mr. Pushpendra Parihar
MBBS 2014, AIIMS Bhopal